नर्मदा नदी–अमरकंटक से हंडिया तक– नर्मदा की यात्रा – 1

तुमने एक न एक नदी तो देखी ही होगी। नदी में नहाने का मज़ा ही कुछ और है! गर्मियों में तो रोज़ नदी के पानी में बैठे रहने को दिल चाहता है।

क्या तुम्हारे आसपास कोई नदी है? उसका क्या नाम है? नदी पास में है तो वहाँ तुम कई बार ज़रूर गए होगे।

क्या तुमने कभी सोचा है कि यह नदी कहाँ से शुरू होती है और कहाँ तक जाती है? उसमें पानी कहाँ से आता है? क्या यह पानी कभी खत्म होता है या कभी सूख जाता है?

क्या उसमें कोई और नदी मिलती है? क्या वह नदी किसी और नदी में मिल जाती है? नदी का किनारा कैसा है– रेतीला? पथरीला? मटियाला? क्या सभी जगह एक सा है?

उसके किनारे बसने वाले लोगों का जीवन कैसा है? नदी के साथ उनका क्या रिश्ता है?

एक बार सोचना शुरू करो तो सवाल खत्म ही नहीं होते। और ऐसे सवालों के उत्तर खोजने निकलो तो मज़ा भी आता है।

आपस में चर्चा करके देखो तुम अपने आसपास की नदियों के बारे में क्या–क्या जानते हो।

नर्मदा की यात्रा लम्बी और सुन्दर

नर्मदा नदी के बारे में तुमने सुना ही होगा। यह अपने राज्य, मध्यप्रदेश की सबसे लम्बी नदी है।

क्या तुम कभी नर्मदा पर गए हो? अगर गए हो तो किस जगह पर? वहाँ तुमने क्या किया था? उस जगह पर क्या–क्या था? अपने साथियों को बताओ।

नर्मदा एक बहुत सुन्दर नदी है। इसकी यात्रा में बहुत से अलग–अलग सुन्दर स्थान देखने को मिलते हैं। लोग इसे पवित्र नदी मानते हैं। हर अमावस्या पर नर्मदा पर श्रद्धालुओं (नर्मदा पर श्रद्धा रखने वालों) की भीड़ लग जाती है। लोग इसमें पैसे और फूल चढ़ाते हैं। शाम को इसमें दीप भी बहाते हैं। जनवरी या फरवरी के महीने में नर्मदा जयंती मनाई जाती है। इस दिन तो नर्मदा अनेक जगहों पर दीपों से जगमगा उठती है।

यह नदी ऊँची–नीची पर्वत श्रेणियों के बीच, घने जंगलों और कंदराओं के बीच, नाचती कूदती बहती है। घाटियों में इसमें कई मोड़ आते हैं और इसके पूरे मार्ग में कई सहायक नदियाँ और प्रपात मिलते हैं। एक स्थान पर इसका पानी संगमरमर की चट्टानों को काटता हुआ बहता है, तो एक दूसरे स्थान पर लाल–पीले बलुआ पत्थरों की विशाल चट्टानों को। 1312 कि.मी. की लम्बी यात्रा के बाद, यह नदी अंत में गुजरात में भरुच के निकट विमलेश्वर नामक जगह पर खम्भात की खाड़ी में मिल जाती है।

हर वर्ष कई श्रद्धालु इस नदी की परिक्रमा भी करते हैं। परिक्रमा यानी नदी का चक्कर लगाना। आमतौर पर परिक्रमा या तो नर्मदा के जन्म स्थान, अमरकंटक से शुरू होती है या फिर उसके मध्य स्थान, हंडिया से। परिक्रमा करने वाले उस स्थान से शुरु करके नदी के समुद्र में मिलने तक उसी किनारे पर चलते हैं। उस किनारे का रास्ता चाहे कितना कठिन हो, परिक्रमा करने वाले समुद्र तक पहुँचने से पहले नदी को पार नहीं करते। समुद्र संगम पर वे नदी को पार करके दूसरे किनारे पर जाते हैं। वहाँ से वापस नदी की शुरुआत तक चलते हैं। नदी की शुरुआत पर फिर नदी पार कर वे उसी जगह पहुँचते हैं जहाँ से उन्होंने परिक्रमा शुरु की थी। एक परिक्रमा पूरी करने में उन्हें साल भर से भी ज़्यादा लग जाता है। बारिश के मौसम में उन्हें किसी जगह रुकना भी पड़ता है।

– *ऊपर मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात का नक्शा दिया है। इस नक्शे में नर्मदा नदी और उसके किनारे बसे कुछ नगर दिखाए गए हैं। नदी को पहचान कर उस पर उँगली फेरो। तीर देखकर बताओ कि नदी किस दिशा में बह रही है।*

– *अमरकंटक को नक्शे में ढूँढो।*

– *तुम्हारे गाँव के सबसे पास नर्मदा तट की कौन सी जगह है?*

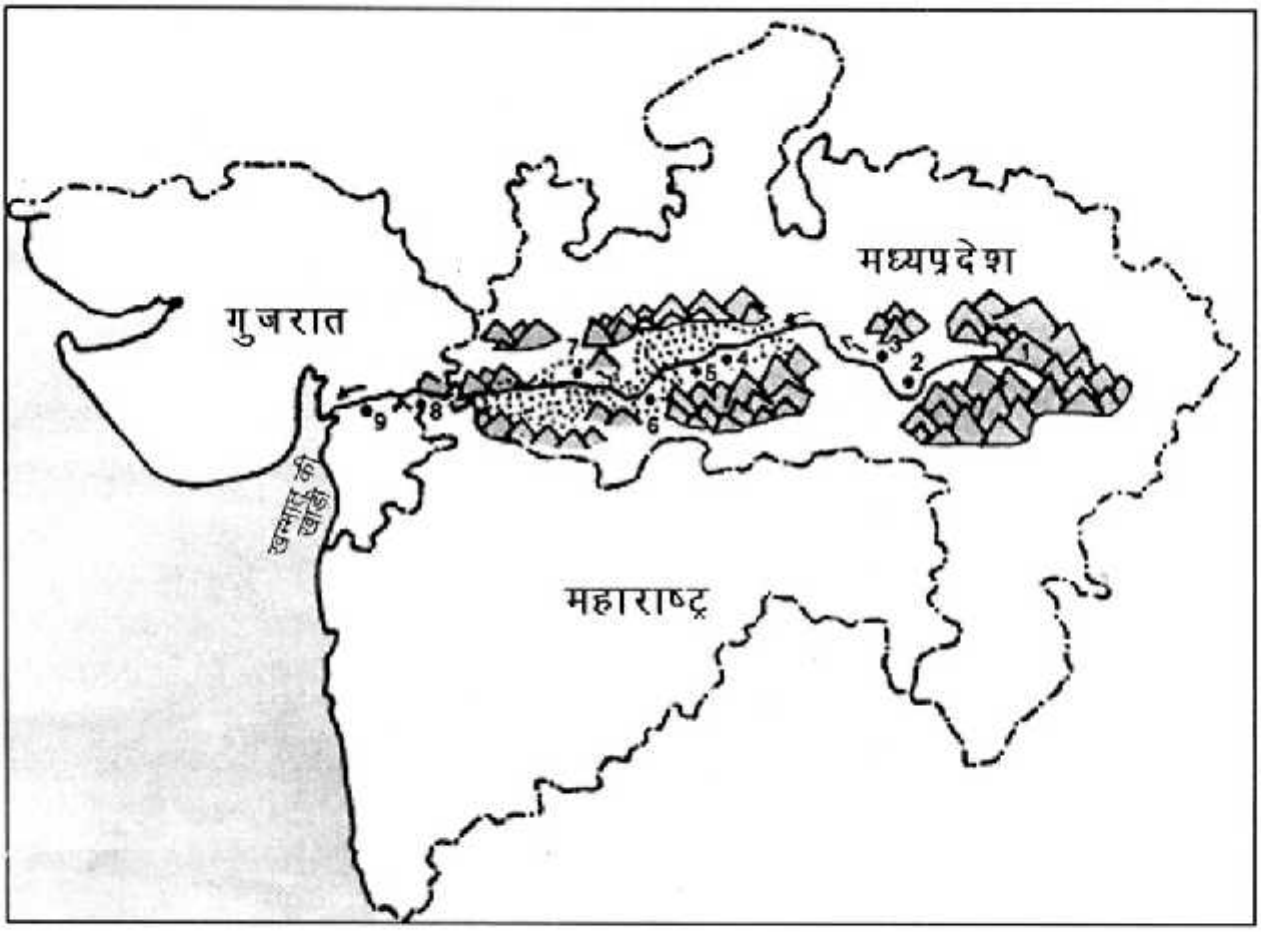

1. अमरकंटक 2. मंडला 3. जबलपुर 4. होशंगाबाद 5. हंडिया 6. पुनासा 7. महेश्वर 8. शुलपाणेश्वर 9. भरूच

राज्य सीमा नदी पहाड़ तट मैदान

अमरकंटक से जबलपुर तक

इस चित्र म जो कुण्ड दिखाई दे रहा है वही है नर्मदा का जन्म स्थान।

तो चलें इस नाचती कूदती नदी के जन्म स्थान से इसकी यात्रा की कुछ झलकियाँ देखें। नर्मदा 1000 मीटर ऊँची, अमरकंटक की पहाड़ी में से निकलती है। बरसात का पानी पहाड़ के अन्दर रिस कर भर जाता है। यही पानी पहाड़ी सोते के रूप में अमरकंटक की पहाड़ी से फूटता है। यही सोता आगे चलकर नर्मदा नदी का रूप ले लेता है। यह नदी आगे गहरीली पथरीली घाटी से कलकल करके बहती है।

इस चित्र में देखो वह कितनी ऊंचाई से "कपिल धारा" बनकर नीचे गिरती है।

अमरकंटक से पश्चिम की ओर बहती हुई नर्मदा मण्डला पहुँचती है। मंडला के थोड़ा आगे सहस्रधारा में वह कई जलधाराओं में बंट जाती है।

मंडला जिले की ऊँची नीची पहाडियों पर से बहती हुई नर्मदा उत्तर की ओर मुडती है।

मंडला के पास सहस्रधारा

नर्मदा नदी मंडला जिला की सीमा पार करके जबलपुर जिले में प्रवेश करती है।

जबलपुर के पास पहुँचकर वह फिर ऊँचाई पर से गिरती है। ऐसे गिरने में उसके हज़ारों–हज़ार कण ऊपर धुँए की तरह उठते हैं। इस कारण इसे धुँआधार प्रपात कहते हैं।

यह मड़ाघाट का धुआंधार प्रपात ह

नक्शे में देखो मंडला और जबलपुर कहाँ हैं?

फिर नाचन कूदने से थककर, तीन मील लम्बी संगमरमर की पहाड़ियों के बीच शांति से सुस्ताती चलती है।

जबलपुर से हंडिया तक

जबलपुर के बाद शुरू होता है विंध्या और सतपुड़ा की घाटियों के बीच नर्मदा का 320 किलोमीटर लम्बा सफर। जबलपुर और हंडिया के बीच की यह घाटी बहुत उपजाऊ है। इसी घाटी में होशंगाबाद नगर है। यहाँ नर्मदा मंद गति से बहती है। नदी का पाट काफी चौड़ा है। होशंगाबाद नगर नदी के दक्षिणी किनारे पर बसा है। लोग ट्रकों में रेत भरकर यहाँ से ले जाते हैं। गर्मियों में इस रेत पर लोग तरबूज और खरबूज की खेती भी करते हैं।

होशंगाबाद म कइ घाट आर मान्दर ह।

होशंगाबाद के सेठानी घाट पर बैठो तो नदी के उत्तरी किनारे पर विंध्य की पहाड़ियाँ नजर आती हैं।

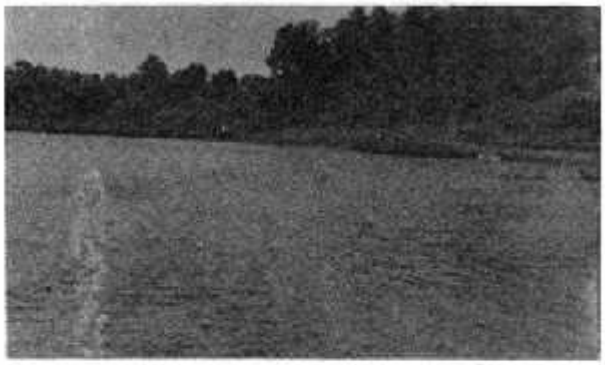

यहा दिए चित्रा म देखो नमदा न कस रेत बिछाइ ह।

होशंगाबाद के पास नर्मदा पर तीन ऊँचे–ऊँचे पुल हैं एक सड़क का और दो रेल के। तीनों इतने ऊँचे हैं कि बाढ़ भी आए तो ये डूबते नहीं। ये तीनों पुल उत्तर भारत से दक्षिण भारत जाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

हंडिया

होशंगाबाद से लगभग 100 कि.मी. दूर है हंडिया। हंडिया नर्मदा की लम्बी यात्रा का मध्य का स्थान है। इसलिए इसे नर्मदा की नाभि भी कहते हैं। हंडिया हरदा नगर से लगभग 20 कि.मी. उतर में है। हंडिया नर्मदा के दक्षिणी किनारे पर बसा है और हरदा ज़िले में है। सामने उत्तरी किनारे पर नेमावर है जो देवास ज़िले में पड़ता है। हंडिया और नेमावर दोनों ही शहरों की बसाहट सैकड़ों साल पुरानी है। उत्तर से दक्षिण जाते समय हंडिया में ही पुराने बादशाहों का पड़ाव रहता था। यही पर से सेनाएँ नदी पार करती थीं। हंडिया के पास करीब सौ कमरों की एक बहुत बड़ी सराय के खंडहर हैं। यह तेली की सराय कहलाती है।

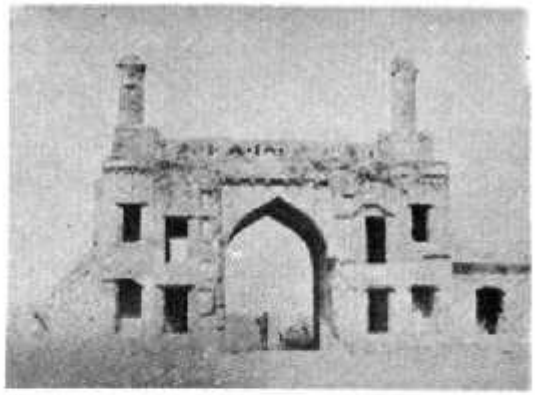

यही हैं हंडिया की सराय के दरवाज़ों के खंडहर।

हंडिया में नर्मदा पर बना ऊँचा पुल

हंडिया में एक बहुत पुराना पुल भी था, जो बरसात में तो डूब जाता था पर ठण्ड से लेकर गर्मियों तक इसके ऊपर से नदी पार की जा सकती थी। अब तो यहाँ पर सड़क का एक ऊँचा पुल बन गया है। इस पर से अब बारहों महीने नर्मदा पार की जा सकती है।

नेमावर में बहुत पुराना और सुन्दर सिद्धनाथ का मंदिर है जो लगभग 800 – 900 साल पुराना है।

कभी यदि तुम नर्मदा के किसी पुल से बस या रेल में गुज़रो तो देखोगे कि कई लोग नदी में रेल या बस की खिड़की से पैसे फेंकते हैं। कई गरीब लोग नदी में तल से ये पैसे ढूँढकर अपने गुज़ारा करते हैं।

नर्मदा नदी हंडिया से समुद्र तक - नर्मदा की यात्रा - 2

जोगा का किला

नर्मदा के जन्म स्थान अमरकंटक से उसके मध्य तक की यात्रा तो हमने नर्मदा नदी के पहले पाठ में की थी। अब चलें हंडिया से आगे और पश्चिम की तरफ।

हंडिया से थोड़ी दूर जोगा नाम का एक द्वीप है। यहाँ एक बहुत पुराना किला है। पुराने जमाने में यहाँ की चट्टानों में काफी ऊपर ही चाँदी पाई जाती थी। आज भी यहाँ पर गाँव बसा हुआ है।

नर्मदा किनारे दोनों ओर कई नगर और सैकड़ों गाँव बसे हैं। मालपौन और पुनघाट जैसे गांवों में कई मछुआरे रहते हैं। ये गाँव जोगा के और पश्चिम में हैं। दिन हो या रात, हर पल कोई न कोई मछुआरा कहीं न कहीं मछली की टोह में बैठा दिखाई दे जाता है।

फिर बड़केश्वर नामक एक गाँव है जहाँ पहुंचने के लिए नाव से जाना पड़ता है। यहाँ खूब बड़ी नावें चलती हैं। नाव पर लोगों के अलावा बैल, बकरी, साईकिल और ढेर सारे मटके भी ले जाए जाते हैं। बड़केश्वर के कुम्हारों द्वारा बनाए गए मटके बहुत मशहूर हैं। ये कुम्हार नर्मदा द्वारा बिछाई गई मिट्टी के मटके बनाते हैं।

बड़केश्वर के और पश्चिम में नर्मदा चट्टानों और घने जंगलों के बीच बहती है। दोनों तरफ ऊँची चट्टाने मानों नदी की रक्षा कर रहे हों। ये हैं उसके पहरेदार उत्तर में विंध्य और दक्षिण में सतपुड़ा।

इस तरह बहती हुई नर्मदा ओंकारेश्वर पहुँचती है।

ओंकारेश्वर में बहुत ही सुंदर मन्दिर और घाट हैं। यह स्थान नर्मदा का सबसे बड़ा तीर्थ स्थान माना जाता है। हर साल लाखों तीर्थयात्री नर्मदा में नहाने और मन्दिर के दर्शन करने आते हैं।

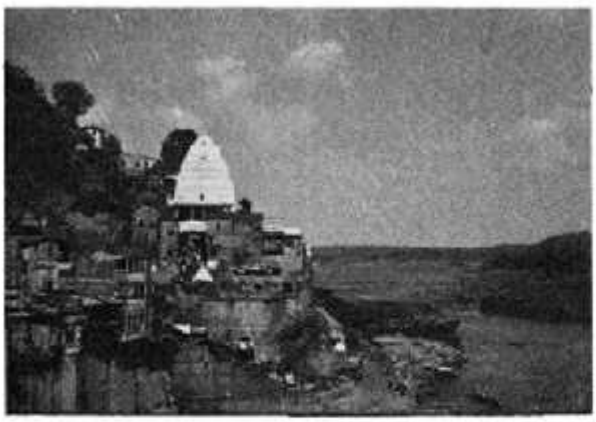

ओंकारेश्वर

चौथ्या का शतक

यहीं ओंकारेश्वर में रहता है चौथ्या नामक एक व्यक्ति। चौथ्या एक अद्भुत शतक के लिए जाना गया है। हालांकि उसे इनाम मिला और उसका

नाम अखबारों में छपा, फिर भी उसे उतने लोग नहीं जानते जितने अमिताभ बच्चन या अज़हरूद्दीन को जानते होंगे। पर चौथ्या का शतक वास्तव में तारीफ के लायक है।

चौथ्या का खेल है नर्मदा की लहरों से खेलना और चौथ्या का शौक है लोगों की जान बचाना। उसने कितने ही लोगों को ओंकारेश्वर में नर्मदा नदी में डूबने से बचाया हैं चौथ्या ने एक–दो नहीं, पूरी सौ जानें बचाकर अपना शतक पूरा किया। उसे इनाम भी मिले। पर जब उससे पूछा गया "बोल चौथ्या! तुम्हें क्या चाहिए?" तो उसने क्या कहा, पता है– "मुझे एक नाव दे दीजिए ताकि मैं एक साथ कई जानें बचा सकूँ।"

नर्मदा आगे चली

ओंकारेश्वर के पश्चिम की तरफ चलने पर नर्मदा के तट पर कई गाँव पार करके आता है महेश्वर। रानी अहिल्या बाई ने यहाँ कई घाट और मंदिर बनवाए थे। महेश्वर के बुनकर बहुत ही सुन्दर व महीन साड़ियाँ बनाते हैं। महेश्वर के पास नर्मदा फिर खूब फैल गई है।

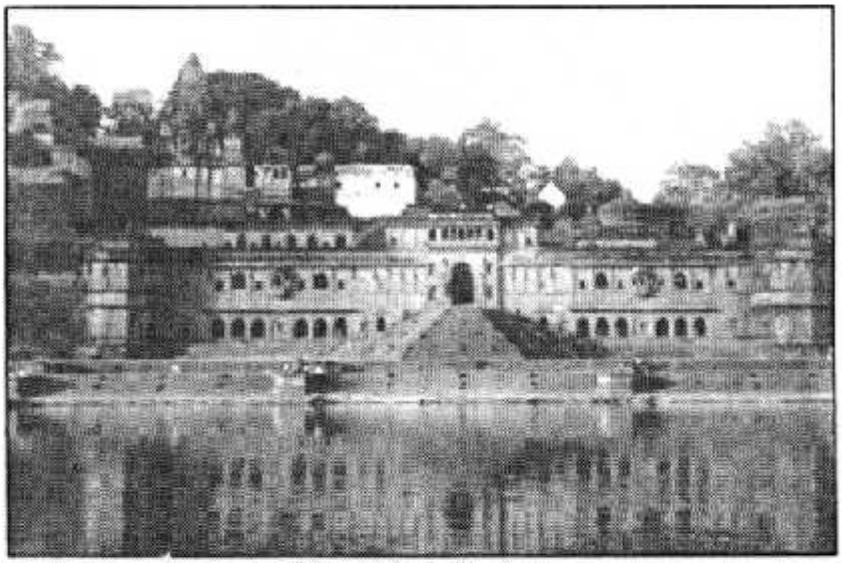

महेश्वर में

महेश्वर से कुछ किलोमीटर पश्चिम में खलघाट है। यहाँ नर्मदा का एक और नया पुल है। इस पर से बम्बई–आगरा, सड़क जाती है। और कुछ दूर पर राजघाट है। बस इसके बाद नर्मदा का किनारा बहुत ही कठिन हो जाता है। दोनों तरफ चट्टान और झाड़ियों का क्षेत्र। इस पूरे क्षेत्र में भीलों के गाँव हैं। यह क्षेत्र शूलपाणि की झाड़ी का इलाका कहलाता है।

मणिबेली

अन्जनवाड़ा और अरदा गाँव इसी क्षेत्र में बसे हैं। ऊपर टेकरी पर जहाँ इनके खेत हैं, वहाँ कई नाले तेज़ी से बहते हैं। इन नालों को भीलों ने छोटे–छोटे बाँधों से रोका है। इनसे बनी छोटी–छोटी झीलों से नहर निकालकर, ये लोग अपने खेतों की सिंचाई करके ठण्ड की फसलें भी उगा लेते हैं।

चट्टान और झाड़ी के इसी क्षेत्र में से बहती हुई नर्मदा मध्यप्रदेश की सीमा पार कर जाती है। थोड़ी दूर तक दक्षिणी किनारे पर महाराष्ट्र है और उत्तरी किनारे पर गुजरात। इन्हें मानचित्र में भी देखो। इस क्षेत्र में भी भील बसते हैं। ऐसे ही क्षेत्र में महाराष्ट्र में बसा एक गाँव है मणिबेली।

आगे करीब सवा सौ किलोमीटर तक चट्टानों को रगड़ती काटती चलती है नर्मदा। कुछ किलोमीटर बाद दक्षिणी किनारे पर महाराष्ट्र का क्षेत्र खत्म हो जाता है। अब नर्मदा के दोनों किनारों पर गुजरात के ही गाँव मिलते हैं। अब नदी गुजरात के समतल मैदान में बहती हुई समुद्र की ओर जाती है।

आगे चलकर शूलपाणेश्वर पड़ता है। यहाँ देवनदी नामक एक छोटी सी नदी ऊपर चट्टानों पर से कूदती फाँदती, नर्मदा से मिलती है। इसी संगम पर स्थित है शूलपाणेश्वर का मन्दिर। शूलपाणेश्वर के बाद खत्म हो जाती है शूलपाणि की झाड़ी। शूलपाणेश्वर से थोड़ी दूर पश्चिम से सतपुड़ा और विंध्य पहाड़ियाँ अब नदी से दूर हटने लग जाती हैं। ये दोनों पहाड़ियाँ अमरकण्टक से ही नर्मदा के साथ चली आ रही थीं।

अब नर्मदा खूब चौड़ी हो जाती है। माना जाता है कि भरुच से पास विमलेश्वर में नर्मदा समुद्र से मिल जाती है। चारों तरफ पानी ही पानी–खारा, नमक का पानी है। यही है खम्भात की खाड़ी। दूर–दूर तक ज़मीन नज़र नहीं आती। बस विशाल अथाह समुद्र।

– जितने रूप हैं नर्मदा के, उतने ही नाम हैं। तुम नर्मदा के और नाम पता करो। जब भी मौका मिले, तुम नर्मदा नदी पर जरुर जाना। जो देखो, उसका चित्र बनाना और उसके बारे में लिखना।

नर्मदा पर बाँध

शायद आगे चलकर नर्मदा का यह रूप देखने को न मिले। इस पर कई जगहों पर और भी बड़े छोटे बाँध बनने वाले हैं। सबसे बड़े बाँध हैं– गुजरात में सरदार सरोवर और मध्यप्रदेश में इन्दिरा सागर। इन बाँधों से हजारों–लाखों एकड़ ज़मीन की सिंचाई होगी और बिजली भी बनाई जाएगी। गुजरात के कई सूखे गाँवों को पीने का पानी भी मिलेगा। पर साथ ही लाखों एकड़ कीमती जंगल डूब जाएँगे। मणिबेली, अन्जनवाड़ा, अरदा, बड़केश्वर जैसे सैकड़ों गाँव भी डूब जाएँगे। कुछ लोगों का कहना है कि इन बाँधों से लोगों का जीवन सुधर जाएगा और दूसरे लोगों का कहना है कि इससे लोग बरबाद हो जाएँगे।

– तुम्हें क्या लगता है? गुरूजी से और आपस में चर्चा करो। क्या ऐसे कुछ तरीके हैं जिनसे सिंचाई हो सकती है या बिजली बन सकती है, पर जंगल और ज़मीन नहीं डूबते? पता करो।

1. *बड़केश्वर के लोग क्या–क्या काम करते हैं? ये लोग बड़केश्वर से दूसरी जगह कैसे आते जाते हैं?*
2. *नर्मदा के उत्तर और दक्षिण में कौन–कौन से पहाड़ हैं?*
3. *अन्जनवाड़ा में लोग अपने खेतों की सिंचाई कैसे करते हैं?*
4. *चौथ्या कहाँ रहता है और उसने कौन–सा शतक बनाया?*
5. *शूलपाणि की झाड़ी का क्षेत्र कैसा है? यह क्षेत्र कहाँ से शुरू होता है और कहाँ खत्म होता है?*
6. *नर्मदा कौन–कौन से राज्यों में से होकर बहती है?*
7. *नर्मदा किस जगह पर समुद्र में मिलती है?*
8. *इस पाठ को पढ़ने के बाद नीचे लिखे शब्दों के अर्थ सोचो और लिखो। यदि समझ न आएँ तो अपने गुरूजी या बहनजी से पता करो। खाड़ी अथाह, संगम, संगमरमर, शतक, टापू।*